10

## मुख्य वचनः 1 कुरिन्थियों 5:7, 8

# खाने का अधिकार किसे है?

लूका के अनुसार चेले रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठा होते थे (प्रेरितों 20:7; KJV)। चेले कौन हैं? वे यीशु के अनुयायी हैं जिन्हें मसीही कहा जाता है (प्रेरितों 11:26)। क्या दूसरों को रोटी खाने और दाखरस में से पीने का अधिकार है?

*डिडेक* के कथनों से यह संकेत मिलता है कि प्रभु की कलीसिया के इतिहास के आरम्भ में केवल बपतिस्मा पाए हुए और वफ़ादारी से जीवन व्यतीत करने वालों को ही प्रभु-भोज में भाग लेने की अनुमति दी जाती थी।

> परन्तु उन्हें छोड़कर जिन्होंने प्रभु के नाम में बपतिस्मा लिया है तुम्हारे यूखरिस्त को कोई दूसरा न खाए या पीए। क्योंकि इस सम्बन्ध में प्रभु ने भी कहा है, "पवित्र वस्तु कुत्तों के आगे मत डालो।"[1]

> और प्रभु के अपने दिन इकट्ठे हो जाओ और रोटी तोड़ो और धन्यवाद करो, पहले अपने अपराधों को मानते, ताकि तुम्हारा बलिदान शुद्ध हो। और अपने साथी के साथ झगड़ा होने पर, कोई व्यक्ति तब तक तुम्हारी सभा में न आए जब तक वे सुलह न कर ले, ताकि तुम्हारा बलिदान अशुद्ध न हो; क्योंकि यह वही बलिदान है जिसकी बात प्रभु के द्वारा की गई है।[2]

टरटुलियन ने लिखा कि मसीही लोग पाखंडियों के साथ भोज में भाग लेकर गलत कर रहे थे।

> वे एक जैसी पहुंच रखते थे, वे एक जैसा सुनते हैं, वे एक जैसी प्रार्थना करते हैं, यहां तक कि यदि उनमें कोई ऐसी बात होती है तो वे काफिर बन जाते हैं। "पवित्र वस्तु वे कुत्तों को डाल देंगे और अपने मोती भी," चाहे (पक्का है) कि वे असली नहीं है वे "सूअरों को डाल देंगे।"[3]

इस कथन में उसने दावा किया कि काफ़िर को प्रभु-भोज के "मोती" नहीं दिए जाते थे। एक धार्मिक समुह की शिक्षा है कि प्रभु-भोज में भाग लेने का अधिकार केवल 1,44,000 को है।

> आज रोटी और दाख में भाग लेने के लिए सभी लोग वे होने चाहिए जिन्हें मसीह "राज्य के लिए वाचा" में लाता है।
>
> कितने लोग हैं जो भाग लेते हैं। यीशु ने कहा कि केवल "छोटे" को ही प्रतिफल के रूप में स्वर्गीय राज्य मिलेगा। (लूका 12:32) पूरी संख्या 1,44,000 (प्रकाशितवाक्य

14:1–3) होगी। उस समूह का चयन सन 33 में होने लगा। तर्कसंगत रूप में अब इसमें भाग लेने वाली केवल छोटी संख्या ही होनी थी।[4]

कुछ कलीसियाएं यह सिखाती हैं कि सहभागिता उन से जो परमेश्वर के अनुग्रह में नहीं हैं रोक लेनी चाहिए। उनका मानना है कि ऐसे लोग यदि प्रभु–भोज को खाते हैं वे अपने ऊपर दण्ड लाते हैं। मार्टिन लूथर की यही शिक्षा थी: "[भोज] में मसीह की देह की उपस्थिति ... व्यावहारिक रूप में इतनी वास्तविक है कि इसे खाकर दुष्ट लोग अपने आपको दोषी ठहराते हैं।"[5]

इस प्रश्न का उत्तर देने में कि प्रभु–भोज देने के योग्य कौन है कई आयतें सहायता कर सकती हैं: प्रेरितों 2:41, 42; 20:7; 1 कुरिन्थियों 5:1–11; और 10:16, 17. आइए प्रत्येक की ध्यान से समीक्षा करते हैं।

## जिन्होंने बपतिस्मा लिया है (प्रेरितों 2:41, 42)

सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए। और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे (प्रेरितों 2:41, 42)।

इस वचन के अनुसार आने वाले वे लोग थे जो रोटी तोड़ने में लौलीन रहे। ये मसीही लोग उन तीन हज़ार आत्माओं में से थे जिन्होंने पतरस की शिक्षा को मानकर बपतिस्मा लिया था और पिन्तेकुस्त के दिन प्रभु की कलीसिया में मिलाए गए थे। रोटी तोड़ने के अलावा वे प्रेरितों की शिक्षाओं को सीखने और उनके अनुसार जीने, मसीही संगति और प्रार्थना में अपने आपको दे रहे थे।

## मसीही लोग (प्रेरितों 20:7)

सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उनसे बातें कीं, और आधी रात तक बातें करता रहा (प्रेरितों 20:7)।

लूका ने लिखा कि चेले अर्थात मसीही लोग (देखें प्ररितों 11:26), वही थे जो रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठा होते थे। फिर बाइबल का यह उदाहरण सिखाता है कि प्रभु–भोज में भाग लेने वाले लोग वही थे जो प्रेरितों की शिक्षा के अनुसार मसीही बन गए थे।

## मसीही जीवन जीने वाले (1 कुरिन्थियों 5:1-11)

जानबूझकर पापपूर्ण जीवन बिताने वाले मसीही लोगों को प्रभु–भोज खाने का कोई अधिकार नहीं है। पौलुस ने लिखा कि अपने पिता की पत्नी के साथ अनैतिक रूप में रहने वाले व्यक्ति को शैतान को सौंप दिया जाए (1 कुरिन्थियों 5:1–8)। इसमें आत्मिक स्तर पर या उसके साथ खाने पर भी मसीही लोगों के उसके साथ संगति करने से इनकार शामिल है (1 कुरिन्थियों 5:11)। निश्चय ही इसमें प्रभु–भोज में भाग लेना भी शामिल है।

वारनर एलर्ट ने इस वचन के विषय में लिखा है:

> यह हवाला प्रभु-भोज के सम्बन्ध में ही हो सकता है, जिसकी चर्चा किसी पत्र में है। चाहे इसका विशेष रूप में अर्थ यह नहीं है पर निश्चय ही यह अपवाद नहीं हो सकता।[6]

बाद में उसने लिखा:

> कुरिन्थी व्यभिचारी के साथ पौलुस की बात के अनुसार करना यह संकेत देने के लिए असम्भव है कि केवल कुरिन्थुस में उससे संगति तोड़ी जाए, और उसके अथेने में होने पर इस पर कोई ध्यान न दिया जाए। एक मन से इकट्ठा हुए कुरिन्थियों में पौलुस उसे शैतान को सौंप देता है (1 कुरिन्थियों 5:4 से)। आरम्भिक मसीही लोगों के लिए शैतान का राज्य स्थानीय रूप में मसीह के राज्य से बढ़कर नहीं था।[7]

पौलुस ने इस अनैतिक व्यक्ति के विषय में स्पष्ट निर्देश दिए:

> पुराना खमीर निकाल कर, अपने आप को शुद्ध करो: कि नया गूंधा हुआ आटा बन जाओ; ताकि तुम अखमीरी हो, क्योंकि हमारा भी फसह जो मसीह है, बलिदान हुआ है। सो आओ, हम उत्सव में आनन्द मनावे, न तो पुराने खमीर से और न बुराई और दुष्टता के खमीर से और न बुराई और दुष्टता के खमीर से, परन्तु सीधाई और सच्चाई की अखमीरी रोटी से (1 कुरिन्थियों 5:7, 8)।

यह पापी व्यक्ति "पुराना खमीर" था। विश्वासी मसीही लोगों को उसके साथ संगति नहीं करनी थी, क्योंकि पापी व्यक्ति होने के कारण वह पूरे मसीह समुदाय को भ्रष्ट कर सकता था। पुराने खमीर अर्थात उस अनैतिक व्यक्ति को निकालने से मसीही समुदाय अखमीरी बना रह सकता था। इस प्रकार से वे दुष्ट व्यक्ति से प्रभावित हुए बिना पर्व अर्थात प्रभु-भोज में आ सकते थे।

गोर्डन डी. फी ने सुझाव दिया है:

> परन्तु यह सम्भव है कि पर्व को मनाने के इस अगला हवाला [1 कुरिन्थियों 5:8] प्रभु की मेज़ पर उनके बैठे होने का संकेत भी है। यकीनी तौर पर यह बताने का कोई ढंग नहीं है, चाहे किसी भाई को निकालने के संदर्भ में मेज़ का संकेत विशेष रूप में आयत 11 की आज्ञा के प्रकाश में कि वे उसके साथ खाएं भी न, बिल्कुल सही होगा।[8]

## एक ही देह के अंग (1 कुरिन्थियों 10:16, 17)

> वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं, क्या मसीह के लोहू की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं। इसलिए, कि एक ही रोटी है सो हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं: क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं (1 कुरिन्थियों 10:16, 17)।

पौलुस ने लिखा कि (रोमियों 12:5; 1 कुरिन्थियों 12:12, 13, 20; इफिसियों 4:4), जो कि कलीसिया है (इफिसियों 1:22, 23; कुलुस्सियों 1:18, 24) की प्रभु-भोज में मसीह की

देह और लहू में सहभागिता है। यीशु की देह और लहू में आत्मिक रूप में सहभागिता करने वाले लोग वही हैं जो उस एक देह अर्थात कलीसिया में हैं। पौलुस ने संकेत दिया कि इस देह के अंग या सदस्य प्रभु-भोज खाने वाले लोग हैं। एक देह के बाहर वाले लोग वे नहीं हैं जिनकी सहभागिता मसीह के साथ है, इस कारण उसकी देह और लहू में सहभागिता करने का उन्हें कोई अधिकार नहीं है।

वह एक देह वही है जो मसीह में है (रोमियों 12:5), जिसमें विश्वास और बपतिस्मे के द्वारा प्रवेश पाया जाता है (रोमियों 6:3; गलातियों 3:26, 27)। इसका अर्थ यह हुआ कि भोज में अपने विश्वास और फिर मसीह में बपतिस्मा लेने वाले लोग ही भाग लेते हैं।

धर्म का दास बनने के लिए किसी ने मन से आज्ञा मानी है या नहीं इसका पता किसी व्यक्ति को नहीं चल सकता (रोमियों 6:17, 18)। मनुष्य के मन को केवल परमेश्वर जानता है। यह सही है इस कारण हर व्यक्ति को प्रभु-भोज में अपने भाग लेने के औचित्य को स्वयं परखना चाहिए। इस तथ्य का कि किसी को खाने का अधिकार है अर्थ यह नहीं है कि दूसरों को उसे भोज से मना करने का अधिकार है। हर व्यक्ति अपनी जांच स्वयं करे और इसी आधार पर यीशु के यादगारी भोज में भाग ले (1 कुरिन्थियों 11:28)।

इस नियम का अपवाद वह मसीही है जिससे मण्डली ने संगति तोड़ ली है। मसीही लोग ऐसे व्यक्ति के साथ न खाएं (1 कुरिन्थियों 5:7, 11)।

प्रभु-भोज देने में सहायता करने वाले लोग यदि समझा दें कि भोज में भाग लेने वाले लोग एक देह में बपतिस्मा पाने के कारण (1 कुरिन्थियों 12:13) मसीह की एक देह के अंग हैं (1 कुरिन्थियों 10:16, 17) तो अच्छा होगा।

## सारांश

कुछ कलीसियाओं में "सीमित सहभागिता" अर्थात कलीसिया के मैम्बर और प्रभु-भोज लेने के लिए कलीसिया के साथ खड़े होने वाले लोगों को ही भाग लेने की अनुमति देने की प्रथा है। कई कलीसियाएं स्थानीय मण्डली के लोगों के लिए ही भोज को सीमित करती हैं।

अन्य कलीसियाएं उपस्थित हर व्यक्ति के लिए सहभागिता को उपलब्ध कराते हुए "खुली सहभागिता" की शिक्षा देने और मानते हैं। ऐसा किए जाने पर हर व्यक्ति को स्वयं तय करना होता है कि वह प्रभु-भोज में भाग ले या न इस समूह में वे लोग हैं जो यह मानते हैं कि उन्हें उपस्थित लोगों को समझाना चाहिए कि केवल मसीह की देह के सदस्यों को ही खाने का अधिकार है। बच्चों और बपतिस्मा न पाए हुए व्यस्कों को भोज में भाग नहीं लेना चाहिए।

प्रभु की मेज़ में खाने का अधिकार परमेश्वर की वफ़ादार सन्तान को है जो मसीह की एक देह अर्थात कलीसिया में हैं। उन्होंने अपने पापों की क्षमा के लिए मसीह में बपतिस्मा लिया है। बपतिस्मा न पाए हुओं को प्रभु-भोज में भाग लेने का अधिकार नहीं है। उन्हें खाने के लिए नहीं कहा जाना चाहिए बल्कि उन्हें बताया जाना चाहिए कि इसमें भाग लेने का अधिकार पाने के लिए उन्हें क्या करना आवश्यक है। हमें किसी से जो इसे खाना चाहता है इसे मना करने का कोई अधिकार नहीं है, उन लोगों के अपवाद के साथ जिन्हें मण्डली से निकाला गया है।

टिप्पणियां

[1]*डिडेक* 9.5. [2]वही, 14.1–3. [3]टरटुलियन *ऑन प्रिस्क्रिप्शन अगेंस्ट हेरेटिक्स* 41. [4]*रीज़निंग फ्रॉम द स्क्रिप्चर्स* (ब्रुक्लिन, न्यू यॉर्क: वाच टावर बाइबल ट्रैक्ट एण्ड ट्रैक्ट सोसाइटी ऑफ़ न्यू यॉर्क, 1989), 267–68. [5]रोनल्ड स्टिवर्ट वालेस, "लॉर्ड'स सप्पर," *द इन्टरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* सम्पा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1986), 3:168. [6]वरनर एलर्ट, *यूखरिस्त एण्ड चर्च फैलोशिप इन द फर्स्ट फोर सैन्चुरीस,* अनु. एन. इ. नेगल (सेंट लूइ: कंकोंडिया पब्लिशिंग हाउस, 1966), 84. [7]वही, 126. [8]गोर्डन डी. फ़ी द *फर्स्ट एपिस्टल टू द कोरिन्थियंस,* द न्यू इन्टरनैशलन कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 218.

## इब्रानियों 13:10 में वेदी से "खाने का अधिकार नहीं"

इब्रानियों 13:10 में घोषणा है, "हमारी एक ऐसी वेदी है जिस पर से खाने का अधिकार उन लोगों को नहीं, जो तम्बू की सेवा करते हैं"–पर वह वेदी है क्या? क्या वह वेदी यीशु है, उसका बलिदान, या फिर प्रभु-भोज?

इब्रानियों 13:10 को चाहे "मास" के साथ जोड़ा गया है, पर हाल ही के विद्वान इस बात से सहमत हैं कि वेदी "या तो वह क्रूस है जिस पर मसीह को बलिदान किया गया, या मसीह स्वयं जिसके द्वारा हम परमेश्वर को प्रार्थना का बलिदान चढ़ाते हैं।"[1]

मूसा की व्यवस्था के अधीन अपने परिवार के लोगों और दासों के साथ केवल याजकों को ही वेदी पर चढ़ाए गए बलिदानों में से खाने का अधिकार था (लैव्यव्यवस्था 7:29–36; 22:10–16)। दूसरों को बलिदानों में से खाने की अनुमति नहीं थी (न ही वे योग्य हो सकते थे)। सक्रिय रूप में यहूदी याजकों के रूप में सेवा करने वाले लोग उस "वेदी" में से नहीं खा सकते थे जिसमें मसीह लोग खा सकते हैं। नये नियम के याजक अर्थात मसीही लोग (1 पतरस 2:9) ही हैं जिन्हें मसीह के बलिदान में से खाने और उसके लहू के द्वारा खरीदी गई आशिषों का लाभ लेने का अधिकार है। बपतिस्मे में मसीह को पहनने वाले सब लोग मसीह के और उसकी आशिषों के सहभागी बन जाते हैं (देखें इफिसियों 3:6; इब्रानियों 3:14)। मसीह का इनकार करने वाले लोग उसके बोझ के साथ साथ उद्धार की उसकी आशीष से भी इनकार करते हैं।

कोई भी व्यक्ति जो क्रूस के द्वारा यीशु के पास आने की इच्छा रखता है उसे ऐसा करने का अधिकार है। किसी को भी जो प्यासा हो जीवन के सोते के पास आने का अधिकार है (प्रकाशितवाक्य 21:6; 22:17)। विश्वास, मन फिराव और आज्ञा पालन में आने वाले लोगों को उद्धार की आशिषों के सहभागी बन जाते हैं। यीशु ने प्रतिज्ञा की, "जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न निकालूंगा" (यूहन्ना 6:37)।

टिप्पणी

[1]पॉल एलिंग्वर्थ एण्ड यूजीन एल्बर्ट निडा, *ए ट्रांसलेटर'स हैंडबुक ऑन द लैटर टू द हिब्रूस* (न्यू यार्क: यूनाइटेड बाइबल सोसाइटीज़, 1983), 327. एफ़. एफ़. ब्रूस ने पूछा, "इस वचन और [प्रभु-भोज] में क्या सम्बन्ध है?" और फिर अपना ही उत्तर दिया: "कोई सीधा नहीं" (एफ़. एफ़. ब्रूस, *द एपिस्टल टू द हिब्रूस* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1964], 401)।